शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

स्वदेशी से गांव 'आत्मनिर्भर' बने

विनोबा

हम चाहते हैं कि हर गांव गोकुल बने, गांववाले सारे गांव को एक परिवार मानकर प्रेम से, मिल-जुलकर रहें। गांव की जमनी सबकी बन जाये, सब भाई-भाई बनकर काम करें और बांटकर खायें। गांव के सब बच्चों को खूब दूध, दही, मक्खन खाने को मिले, जैसे गोकुल के ग्वालबालों को मिलता था। आज गांववाले खुद दूध, मक्खन आदि पैदा करते हैं, पर बच्चों को खिलाते नहीं और न खुद खाते हैं। वे उन्हें शहरों में जाकर बेच आते हैं। हम चाहते हैं कि दूध मक्खन पहले अपने बच्चों को खिलाया जाये और बचा हुआ बेचा जाये। लेकिन आज गांववालों को दूध, मक्खन बेचना पड़ता है, क्योंकि कपड़े जैसी जरूरत की चीजें वे खुद नहीं बनाते। कपास पैदा करते हैं, परंतु उसे बेच देते हैं और शहरवालों का बनाया मिल का कपड़ा खरीदते हैं। तिल्ली पैदा करते हैं, पर उसे बेचकर बाहर का तेल खरीदते हैं। गन्ना पैदा करते हैं, पर उसे बेचकर चीनी खरीदते हैं। होना तो यह चाहिए कि कपड़ा, तेल, गुड़ आदि चीजें गांव में ही बनें। आज आप कपड़ा बनाते नहीं, इसलिए कपड़ा खरीदने के लिए पैसा चाहिए। पैसा कहां से आये ? लाचार होकर पैसे के लिए दूध, मक्खन बेचना पड़ता है। अगर आप अपना कपड़ा खुद बना लेंगे, तो आपको मक्खन नहीं बेचना पड़ेगा।

हम गांववालों को यही समझाते हैं कि पैसे की माया में मत पड़ो। खूब दूध, घी, सब्जियां पैदा करो। बच्चों को खिलाओ, खुद खाओ और फिर बचा हुआ बेचो। आज तो आप शहरों में दूध मक्खन बेचने जाते हो, तो शहरवाले चाहे जितने कम दाम में आपसे खरीद लेते हैं, क्योंकि चार-छह मील चलकर शहर के बाजार में जाने पर आप बिना बेचे तो वापस नहीं आ सकते। लेकिन गांव का परिवार बनाओगे, गांव में उद्योग खड़े करोगे, मिल-जुलकर रहोगे, तो फिर शहरवाले खुद होकर आपके पास दूध, घी मांगने आयेंगे।

आज आपके चारों ओर घटोत्कची माया फैली है। सब तरफ मिलों का कपड़ा छाया हुआ है। आपको तो सूत का ही कपड़ा पहनना चाहिए। अपने गांववालों पर जो प्रेम नहीं करते, वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चर्मकार हैं, वह जूता बनाता है तो उसका जूता हम नहीं खरीदेंगे, तो गांव का चर्मकार मर जाएगा। इसी तरह आपके गांव के तेली का तेल आपको खरीदना चाहिए। लेकिन हम कहते हैं कि हमारे गांव के चर्मकार का जूता महंगा है, तेली का तेल महंगा है, बुनकर का कपड़ा महंगा है। इस तरह अगर गांव के चर्मकार का जूता, तेली का तेल, बुनकर का कपड़ा, गांव का गुड़ और गांव की चीजें हमें महंगी लगेंगी तो हम जी नहीं सकेंगे। हम महंगा-महंगा कहते हैं, लेकिन वास्तव में वह महंगा नहीं है। गांव के तेली का तेल चर्मकार खरीदता है और चर्मकार का जूता तेली खरीदता है तो इसका पैसा उसके घर में जाता है, उसका पैसा इसके घर में आता है। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है ?

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मैं कहना चाहता हूं कि आप लोग बाजार के सामने टिक नहीं सकेंगे। उसे आप अपने हाथ में तभी रख सकते हैं, जबकि ग्रामस्वराज्य हो और वह ग्रामस्वराज्य भी ग्रामदान की बुनियाद पर ही होगा। जब तक आप ग्रामदान नहीं करते, तब तक आप शहर के गुलाम ही रहेंगे।

ग्रामोद्योगों को संरक्षण

देहात के धंधों को देहात में रखना चाहिए और परदेश से जो माल आ रहा है, उसके विरोध में शहरों में धंधे खड़े होना चाहिए। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहात को लूट रहे हैं। अगर इससे उलटा बना यानी परदेश के धंधे के विरोध में शहर वाले खड़े हो गये और देहात के धंधों को उन्होंने बचा लिया तो देहात और शहर दोनों का सहयोग होगा और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम अपने कुछ जंगलों को रिजर्व रखते हैं, वैसे देहात के लिए कुछ धंधे रिजर्व रखना चाहिए। इस तरह देहात को धंधों को हमने सुरक्षित नहीं रखा, तो देहात उजड़ जायेंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे।

शहरी माल का बहिष्कार

इस समय जरूरत है कि गांव-गांव किले के सामन मजबूत बनें। स्वदेशी आंदोलन के समय जिन वस्तुओं का बहिष्कार किया था, वे वस्तुएं आज खुलेआम आ रही हैं। कपड़े भी विदेश से आते हैं और वे सस्ते मिलते हैं, इसलिए लोग उन्हें लेते भी हैं। गांववालों को चाहिए कि जो माल गांव में बन सकता है, वही खरीदें, शहर का बना माल कभी न खरीदें। तभी गांव और शहर दोनों मजबूत बनेंगे। शहरवाले जो कच्चा माल गांव में बनता है, उसका पक्का माल बनाते हैं। विदेश से जो माल आता है, उसका प्रतिकार नहीं करते। विदेश का हमला शहरों पर हो रहा है। फिर यदि देहाती लोग बेकार बनते जाये और उनका हमला भी शहरों पर होने लगे, तो दोनों के बीच बेचारे शहरवाले पिस जायेंगे।

अगर आप ग्रामीण अर्थशास्त्र समझ लेंगे तो आपको भूदान समझाने की जरूरत ही नहीं रहेगी। आप गांव में जमीन बांट लेंगे, गरीबों को जितनी जमीन चाहिए उतनी दान में देंगे, गांव में ग्रामोद्योग खड़े करेंगे। महत्व की चीजें बाहर से नहीं खरीदेंगे, बल्कि खुद बनायेंगे और जो चीजें बाहर बचेंगे, उसका दाम ज्यादा रखेंगे। यह सारा इंतजाम संघशक्ति से ही करना होगा। अलग-अलग बेचने जायेंगे, तो ज्यादा पैसा नहीं मिलेगा। इसलिए आपको गांव का एक संघ बनाना होगा। यही हमारा ग्रामीण अर्थशास्त्र है।

(साम्ययोगी समाज, विनोबा साहित्य, खंड 18)